

DPN 5724

Title: ग्रहाचर्चन विधि / GRAHĀRCCANA VIDHI

Run. No. 6415

Cat. No.

Micro. No.

Subject विधि / Ritual

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / Newa direction

Size in cms. 12.5 x 6.5

Folios 14

Lines (in a page) 13

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuji. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thyaṣaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

↓
१. ॐ नमो नवग्रहाम ॥ ग्रहाचर्चन विधि लिख्यते ॥
हस्ताक्षर / Colophon—
इति ग्रहाचर्चन विधि

15

10

5

यस्य ननका इव नाम ला ॥
रविद्वन्दवाभाभाकसर्वसंज्ञागोविनिचिद्रवयुतपूने
वृद्धमकीसमूहस्य तौ ध्याता नाम यत्नम् ॥ श्री न

श्री नमो वागिष्ठयाय ० श्री नमो

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

2012 22 108

12/12/12

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 यथा ह्येतद्विद्विर्लोकः ॥
 यजमानतः ॥ ॐ नमः ॥
 यथा ह्येतद्विद्विर्लोकः ॥
 यथा ह्येतद्विद्विर्लोकः ॥
 यथा ह्येतद्विद्विर्लोकः ॥
 यथा ह्येतद्विद्विर्लोकः ॥
 यथा ह्येतद्विद्विर्लोकः ॥
 यथा ह्येतद्विद्विर्लोकः ॥

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॥ ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥
ॐ स्वस्ति ॥ ॐ त्वमस्येश्वरः ॥
ॐ अथास्यमानः ॥ ॐ अ
स्य कूर्मा ॥ ॐ अथ दशकु
न्दः ॥ ॐ अथ दानवः ॥ ॐ
अथानाद्य विविधाः ॥ ॐ अ
थ यन्त्राः ॥ ॐ अथामिन्द्रः ॥

ॐ द्वात्रिंशद्वी ॥ ॐ चत्वारि
 लिङ्गिणी ॥ ॐ अक्षुत ॥
 ॐ ॐ द्वाविंश ॥ ॐ अग्नि
 मी ॐ ॥ ॐ ॐ द्वात्रिंश ॥
 ॐ अग्नि अग्नि ॥ ॐ अग्नि
 द्वा ॥ ॐ उपद्रव ॥
 ॐ नदी ॥ ॐ अग्नि ॥
 ॐ द्वात्रिंश ॥ ॐ अग्नि
 वक्रान ॥ ॐ अग्नि ॥ ॐ
 अग्नि कर्मिन् ॥ ॐ अग्नि
 वक्रान ॥ ॐ अग्नि ॥
 ॐ अग्नि ॥ ॐ अग्नि ॥
 ॐ अग्नि ॥ ॐ अग्नि ॥

वचला कया लय ॐ
 द्वात्रिंश ॥ ॐ अग्नि ॥
 ॐ अग्नि ॥ ॐ अग्नि ॥
 ॐ अग्नि ॥ ॐ अग्नि ॥
 ॐ अग्नि ॥ ॐ अग्नि ॥
 ॐ अग्नि ॥ ॐ अग्नि ॥
 ॐ अग्नि ॥ ॐ अग्नि ॥

अदित्या यन्त्रिंश ॥
 ॥ अग्नि ॥ ॐ अग्नि ॥
 अदित्या यन्त्रिंश ॥
 वक्रान ॥ ॐ अग्नि ॥
 ॐ अग्नि ॥ ॐ अग्नि ॥
 ॐ अग्नि ॥ ॐ अग्नि ॥
 ॐ अग्नि ॥ ॐ अग्नि ॥
 ॐ अग्नि ॥ ॐ अग्नि ॥

यजमानस्य आदित्यगु
हात्यन्नति ॥

ॐ भामाय उमायति ॥
ध्यान ॥ ॐ स्वतश्चर्गाव ॥
भाममूर्तय ध्यानमूर्त्यै ॥
स्वतश्चर्गाव ॥ वद ॥
ॐ लू मन्द बा ॥ ॐ गीष्ट
न ॥ ॐ मूर्त्युक्तवमृत ॥
म ॥ भामकृष्णचतु ॥
यजमानस्य भामगुहा
त्यन्नयि जगन्नाथ ॥

भूगानायकन्यायति ॥

ध्यान ॥ ॐ न कर्मात्माव ॥
भूगानमूर्तय ध्यानमूर्त्यै ॥
न कर्वाचर्गाव ॥ वद ॥
ॐ मूर्तिमूर्ति ॥ ॐ यद
सुन्द ॥ ॐ ध्यानाय धिदी ॥
म ॥ ॐ पूर्ववाटा ॥
यजमानस्य भूगानगु
हात्यन्नयि जगन्नाथ ॥

ॐ वक्षाय नारायणायति ॥
ध्यान ॥ ॐ यत्तमात्माव ॥
वक्षमूर्तय ध्यानमूर्त्यै ॥
कं कर्मचर्गाव ॥ वद ॥
ॐ इन्द्राय स्वाहा ॥ ॐ लू

द्विष्टुं विष्टुं ब्रवा
हमसि ॥ सा ॥
ॐ धनिष्ठादादगजन्म ॥
यजमानस्य वक्ष्ये गृह्य
नयीत गार्ग्य ॥

ॐ वदस्य तथ वक्ष्ये ॥
ध्यान ॥ ॐ वदस्य गृह्य ॥
वदस्य तिसृक्तं ध्यानपूर्वकं
लोभावन च न्यनादि ॥
वद ॥ ॐ वदस्य तज्जति ॥
ॐ आ वक्ष्ये वाक्क ॥
ॐ वदस्य मान् ॥ सा ॥
ॐ सिन्धुदलोक्तवरो ॥

यजमानस्य वदस्य ति
गृह्य नयीत गार्ग्य ॥

ॐ शुक्लाय नमः ॥
ध्यान ॥ ॐ वदस्य वदस्य ॥
गृह्य वदस्य न्यनादि ॥ वद ॥
ॐ अन्नाय विष्णवे ॥
ॐ सजाया वदस्य ॥ आ ॥
ॐ वदस्य वदस्य ॥ सा ॥
ॐ वदस्य वदस्य ॥
यजमानस्य गृह्य
नयीत गार्ग्य ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्री नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 कस्तूरी चन्दन रुविताक ॥
 वंद ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ यमनदक ॥
 ॐ युजाय नमः ॥ श्री ॥
 ॐ श्री हनुमन् ॥
 यजमानस्य नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 हात्यनयतामस्तु ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्री नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 कस्तूरी चन्दन रुविताक ॥

॥ वंद ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 यजमानस्य नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 हात्यनयतामस्तु ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्री नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 कस्तूरी चन्दन रुविताक ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

यजमानस्य कुरुगुहा
त्यत्र यीजानां कुरुगुहा

ॐ ज न न स क म वि श्र ति
ध्या न ॥ ॐ क र्मा जि न ॥
गी र व पु न द ना दि ॥ व द ॥
ॐ त म स्य सृ द न्ना म ह ॥
ॐ स क मृ य य ति हि ॥
ॐ य न स्या दि श्या ॥ म्हा ॥
ॐ स त म्हा वि व ध न्ना ॥
न व स म्हा वि ॥ उ म य
स हि ना य व क न य व न
मा म्हा ॥ य ज मान स्य क
न ग ह त्वा न यी जाना नि ॥

ॐ नृादि द ग ला क या
ले य ॐ द न्ना म न ॥ २ य ॥

ॐ ग ता न मि न्द्र ॥
ॐ अ मि र्म ह्वा ॥
ॐ य म न द न्ना ॥
ॐ य न द वी ॥
ॐ म म व वृ न्ना ॥
ॐ न व वा य वृ स्य त ॥
ॐ क वि दं ग ज व म्हा ॥
ॐ त मी न नं ज ग त म्हा ॥
ॐ गी लि प द वि च क म्हा ॥
ॐ व क य र्ना न ॥
ॐ नृा दि ला क या ले य त म्हा

अथ कुमादि अथ वि
 नंजी वंशं दमासनादि ॥
 ॐ वाक्त्र नं सवितर ॥
 ॐ महिओ एथि वी ॥
 ॐ जस्य कृमा ॥
 ॐ तीव्रानथा वान ॥
 ॐ वरुमा सा लोसि ॥
 ॐ अय ० सरुम ॥
 ॐ पुजाय नं ॥
 ॐ सुक मृषय ॥
 अथ कुमादि अथ वि
 नंजी वंशं दमासनादि ॥

यथ वकुम दालिवा
 यमूर्त थयं दमासनी ॥
 ॐ सद्यो जाता ॥
 ॐ वामम य सविदु ॥
 ॐ जात नूदलिवा ॥
 ॐ यत्न नूषं गुदधू ॥
 ॐ तमी नं जगत क
 यथ वकुम दालिवा य
 मूर्त थयं दमासनी ॥

मासादि यकादि मूर्त थ
 यं दमासनी २ मूर्त थ २ ॥
 ॐ अथ मासा ॥
 ॐ अथ यकति ॥

15

10

5

ॐ व न नू द सा ग ॥
ॐ अ व नू द म दी ॥
ॐ श य ज म सि ल य ज ॥
गु म कं य था म द ॥
व त क नू द व र म न ॥
गु य र्क य म द र गु ॥
ने ह ना मा नि स्र वि ॥
उ स्र सि न रू द ॥
ॐ य य ४ य धि वृ ॥
वि ध्वा न वा ट म सि ॥
ॐ गु मि र्द व ता ॥
ॐ द्यो ४ ल नि ॥
ॐ गु म कं ॥ व रु स्र सि ॥
न २ ता दि वि

गुहसक्तै नक्त ॥
ॐ आदित्यादिलवगुहय
ॐ सुयोदिसांगायसगलति
ॐ देसासन ॥
ॐ दमावाहयिधु ॥
अर्घ्य ॥ यत् ॥ यज्ञायवीत
युष्य ॥ धूय ॥ दीप ॥
अर्गुगंधादि ॥ मगुलस

ॐ नमानवगुहाय ॥
ॐ जवाकसुसर्गकाग ॥ १
दक्षिणसमुखाया ॥ २
धनगुणिकसुसुत ॥ ३
द्विर्गुणिकसुसुत ॥ ४
द्वानाचिसुषीताच ॥ ५

हिमकुन्दमृतालार ॥ ६
नीलारुनसमयुक्त ॥ ७
अर्द्धकार्यमहावीर्य ॥ ८
ॐ यत्तालधूसर्गकाग ॥ ९
सुगुणिकसुसुत ॥ १०
गामनाकसिद्धिमाग ॥ ११
सुसुमिगुलसुव ॥ १२
दक्ष ॥ कागुयमावादि १३
यथावालयुहावति ॥
अर्गुगंधादि ॥
मगुलसुथीदस्वाननकुय ॥
मगुलविमर्जन ॥
नामिय ॥
गुहसदक्षिणतयक ॥

कतं न कं ॥ अध्याह्नो ॥
रासे याय ॥ विभक्तं ॥
ॐ उदु यं तमस्य ॥
सूर्यं साक्षि ॥ यजमानं स्याति ॥
कृतकर्मलसाक्षि ॥
वाविवाचक वक्ष्याय ॥
धनदानयाय ॥

आदिता यं वीपुयति ॥
वक्ष्याय न ॥
वक्ष्याय वीतकपूष्य ॥
कं कर्मलं रवजाम ॥
ॐ कविलं सर्वदेवानां ॥
ॐ मां वज्रत घटितं सव
सूधनूदानदासवृ ॥

॥ दद ॥ कर्मलामुलं रव ॥
ॐ अद्य ॥ यजमानं स्याति ॥
ॐ मां सवत्सधनदानं तु स्य
महं मयुददं ॥ सवि ॥ ॐ कायाम
सालिखानुवीदियतु दानं ॥
दक्षिण ॥ एतदानं ति ॥
ॐ आकथं ॥ आनीवृदि ॥

मालिखानु ॥ ॐ मालिखानु
मय्यायुं ॥ ॐ दं दिवगु
नर्मुसहितं मालिखानु
नुदानदातवृ ॥ ददस्य ॥
ॐ अद्य ॥ यजमानं स्याति ॥

सामायउ मायामुपुयति ॥
लीखनुचन्दनादि ॥
एतयक्षायवीतकपूष्य ॥

कंकगलंखजानक ॥
ॐ यशस्वीर्गंखयपुमार्ता ॥
ॐ दं वजतद्यतितं गं
खदानदातवर्ग ॥ ददस्व ॥
कमलामललंख ॥ अशु ॥
यजमानस्यति ॥ ॐ दं व
जतद्यतितं गंखदानेनु
यमहं संप्रददं ॥ स्वस्ति ॥
कोदा ॥ ॐ ततिलवीदि ॥
दक्षिण ॥ अंगीर्षाद ॥
ॐ ॐ मन्दं वा ॥

अंगीवायस्कीदाथति ॥
वक्रचन्दनादि ॥
वक्रयज्ञायवीतकयय ॥

कंकगलंखजानक ॥
ॐ धर्मस्वीदयवृथल ॥
ॐ मं वजतद्यतितं वक्रम
नूदाहदानदातवर्ग ॥ ददस्व ॥
कमलामललंख ॥ अशु ॥ यज
मानस्यति ॥ ॐ मं वजतद्यति
तवक्रमनूदाहदानेनुस्य ॥
॥ स्वस्ति ॥ ॐ कोदात ॥ वक्रसे
ष्येवीदि ॥ दक्षिण ॥ अ
ंगीर्षाद ॥ ॐ अंगीमूर्धा ॥

गुहयार ॥ ॐ गुहयारुम
मायकं ॥ ॐ दं दिवपुग
वृसहित गुहयारुदानदा
तवर्ग ॥ ददस्व ॥ ॐ अशु यज
मानस्यति ॥

वृक्षयनावायनाथति॥
कंकमचन्दनादि॥
वीतयज्ञायवीतकय्य॥
कंकमलखजान॥
ॐ दिवगुगर्गगर्गल्य॥
ॐ दीदिवगुदानदातव्य॥
॥ ददसु ॥ कंकमलख ॥ अ
यजमानस्यति ॥ ॐ द
दिवगुदानं दुसमहर्षे ॥
सुसि ॥ ॐ कादा ॥ वीतस
व्ययवीदि ॥ दक्षिण ॥ अ
नीवदि ॥ ॐ ददसु ॥

वृक्षयनावायनाथति ॥
नावाचनचन्दनादि ॥
वीतयज्ञायवीतकय्य ॥

कंकमलखजानक ॥
ॐ वीतवसुयुगीयस्मात ॥
ॐ दीदीतवसुदानदातव्य
॥ ददसु ॥ कंकमलख ॥
ॐ अय ॥ यजमानस्यति ॥
ॐ दीदीतवसुदानं दुस ॥
सुसि ॥ कादा ॥ यववीदि
यादुदान ॥ दक्षिण ॥ अमी
वदि ॥ ॐ ददसु ॥ अति ॥

यवयादु ॥ ॐ यवयादुस
मायक ॥ ॐ दीदिवगुग
र्गमदित यवयादुदान
दातव्य ॥ ददसु ॥ ॐ अय ॥
यजमानस्य वद्वित ॥

मुद्रायाम् काय ति॥
 शिखण्ड न्य नादि॥
 श्वेतयज्ञाय वीतयस्य॥
 कंकण लीख॥ ॐ विष्णुस्व
 मण्डूयानि॥ ॐ मंत्रज
 तद्यतिता अष्टदानदत्त
 वृ॥ ददस्व॥ कण्ठामल
 लीख॥ ॐ अष्ट॥ यजमा
 नस्यति॥ ॐ मंत्रजद्यतिता
 अष्टदानं तु यमदं॥ सुमि॥
 ॐ कादा॥ कमावधीदि॥
 दक्षिण॥ अग्नीष्टदि॥
 ॐ अष्टाय विष्णुता॥

[illegible]

माघलाह ॥ ॐ माघलाह
समायुक्ती ॥ ॐ दीहि वरं

नमो संहित मायभाहदा
नदातव्यं ॥ ददस्व ॥ अहं ॥
यजमानस्य सध्वंति ॥
माहवै कालाय सध्वंति ॥
कृष्णगुणचन्द्रनादि ॥
कृष्णयज्ञाय दीत कयूय ॥
कंकगलैखजानकं ॥
ॐ यस्माद्गर्गानिकर्माणि ॥
ॐ दं वज्रतद्यति तखम्
दोनदातव्यं ॥ ददस्व ॥
कृष्णहामल्लैख ॥ ॐ अहं ॥
यजमानस्य तिवज्रतद्यति
तखम् दानं दुस्यमहं स
यदद ॥ स्रुति ॥ ॐ कादात ॥

कयूमायवीदि ॥ दकिणा ॥
आनीवृदि ॥ ॐ कयूयि ॥
खम्सद्यज्ञवसा ॥ ॐ अहं ॥
दग्नाति ॥ ॐ दं कयूयताका
मंससंहितखम् दानदात
व्यं ॥ ददस्व ॥ अहं ॥ यजमानस्य
कतव्यं विदुगुकायति ॥
विचिद्रचन्द्रनादि ॥
विचिद्रयज्ञाय दीत कयूय ॥
कंकगलैखजानकं ॥
ॐ कृष्णसर्वयज्ञानां ॥
ॐ मं वज्रतद्यति तक्रुगदा
नदातव्यं ॥ ददस्व ॥ कृष्णहाम
ल्लैख ॥ ॐ अहं ॥ यजमा

नमोति ॐ मीवजतद्य
तित क्तागेदानं तु सुम
हं संप्रददं सुक्ति ॥ ॐ
कोदा ॥ कनकुर्वीहि ॥
दक्षिण ॥ आनी बुदि ॥
ॐ कुरु कुरु न कतव ॥

जन्म न स कसु विशति ॥
प्रीत्युच्यते नदि ॥
पुनर्यज्ञाय वीतयुष्य ॥
कंकलं रज्जुजानक ॥
ॐ यस्मादसु नृण यनं ॥
ॐ दीवजतद्य तित सयु
दानदातवुं ॥ ददसु ॥

कनकुर्वीहि ॥
अथ ॥ यजमानमभ्युति
ॐ दीवजतद्य तित न
यादानं तु सयु ॥ सुक्ति ॥
ॐ कोदा ॥ अकतवुं हि ॥
दक्षिण ॥ आनी बुदि ॥
ॐ ता असा ॥

हृदक्षिणकाय ॥ ॐ अ
हं बुदाथति ॥ ॥ यजमान
मूर्ध्याशशिष्यक ॥ चन्द
नाद्यानी बुदि नंदद ॥
ॐ विप्रदातु न विमि ॥